फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य

संदर्भ और प्रकृति

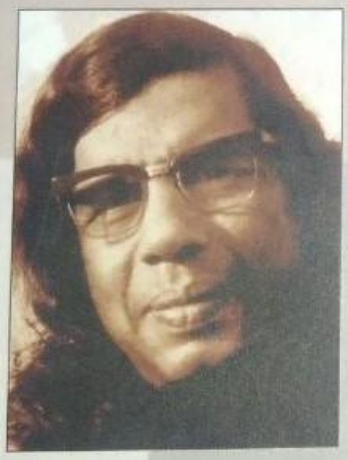

संपादक मंडल

डॉ. सतीश यादव

डॉ. संतोष कुलकर्णी

डॉ. रणजीत जाधव

डॉ. हणमंत पवार

ISBN : 978-93-85647-03-1

प्रथम संस्करण : 2022

© लातूर जिला हिंदी साहित्य परिषद्, लातूर

मूल्य : ₹ 1495/-

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक या लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलैक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्लिखित प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस
1/10753, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110 032 (भारत)

विक्रय कार्यालय
2/9, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110 002

संपर्क : 9599483887
ई-मेल : info@yashpublications.co.in
वेबसाइट : www.yashpublications.co.in

डिस्ट्रीब्यूटर : यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.
Available at : amazon.in, flipkart.com

लेज़र टाइपसेटिंग : जी.आर.एस. ग्राफिक्स, दिल्ली

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली

अनुक्रमणिका

आमुख vii

(अ) उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु

1. फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास साहित्य : संदर्भ और प्रकृति 1
रमा नवले

2. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में ग्राम यथार्थ 8
संजय व्यंकटराव जोशी

3. अस्मिताबोध और 'मैला आँचल'.... 13
डॉ. विलास अंबादास साळुंके

4. 'मैला आँचल' में आँचलिकता 19
डॉ. संगीता शरणप्पा उप्पे

5. 'मैला आँचल' का वस्तुगत अध्ययन 26
डॉ. रजिया शहेनाज शेख अब्दुल्ला

6. 'मैला आँचल' की आँचलिकता 32
डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील

7. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में आँचलिकता 37
डॉ. पवार राजाभाऊ श्रीहरी

8. रेणु और आंचलिकता 42
प्रा. संतोष शिवराज पवार

9. 'मैला आँचल' में व्यक्त ग्रामीण जीवन 47
डॉ. पठाण अयुबखान जी.

'मैला आँचल' की आँचलिकता

डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील

आलेख का उद्देश्य : फणीश्वरनाथ रेणु का चर्चित उपन्यास 'मैला आँचल' जिसके लिए उन्हें 'पद्मश्री' प्राप्त हुआ। मैला आँचल के आँचलिक तत्वों को समझना।

साहित्य भाव साहित्यम् : उक्ति के अनुसार जो हित भावों से प्रेरित है वह साहित्य है। सहत का अर्थ साथ-साथ भी होता है। जहाँ साथ-साथ रहने का भाव होता है उसे साहित्य कहा गया है। आज तक दुनिया में ऐसा एक भी शब्द नहीं है जिसका अर्थ उसके साथ न हो। उसमें कोई संदेह नहीं है कि साहित्य सीधा मनुष्य के जीवन से जन्म लेता है। एक पाश्चात्य विद्वान ने कहा है– भाषा के माध्यम सें जीवन की अभिव्यक्ति का नाम साहित्य है। हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में ष्जीवन की जहाँ तक गति है वहाँ तक साहित्य का क्षेत्र है। जीवन से दूर हटा हुआ साहित्य अपना महत्त्व खो देता है।"1एक दौर में भारत में रचनात्मक साहित्य को सुकोमल साहित्य के रूप में देखा जाता है और दर्शनशास्त्र, न्याय, व्याकरण आदि को कठोर, कठिन साहित्य के रुप में देखा गया है। गणीत और विज्ञान की पुस्तकें आपकी बुद्धि को सचेष्ट जरुर बनाती है किन्तु वह पूस्तकें जीवन के करिब नहीं होती है। इसके ठिक विपरीत उपन्यास, कहानी, कविता जीवन के करिब होते है। इसलिए वह जीवन का साहित्य बन जाते है। इसी जीवन के साहित्य को सुकोमल साहित्य भी कहा गया है क्योंकि यह मनुष्य के मन को संवेदनशील बनाने का कार्य करते है। कन्याकुब्ज के राजा के दरबार में कवि हर्ष को नीचा दिखाया गया था यह कहकर कि यह सुकूमार वस्तु ज्ञाता है उत्तर में हर्ष ने बड़े गर्व से कहा था मैं सुकूमार और कठोर वस्तुओं का जानकार हूँ।

Scanned with CamScanner

साहित्य जीवन से उत्पन्न होता है क्योंकि साहित्य जीवन में ही रहता है और किसी भी साहित्य के पढ़े-लिखे जाने का कारण भी जीवन में ही खोजा जाना चाहिये। जीवन में ही साहित्य को समझने की शक्ति होनी चाहिये। हमारे आत्मा में अखण्ड ऐक्य का आदर्श है। हम जो कुछ जानते है उसे ऐक्य सुत्र से जानते है। हमारे जानने में, पाने में जहाँ अंतर दिखाई नहीं देता वहाँ ऐक्य निर्माण नहीं हो पाता। उदाहरण के लिए किसी पिसारा फैलाए मोर को देखना सौंदर्य है यह उसके मोरपंख में हर रंग में ऐक्य है। गुलाब के पुष्प में रंग, गंध, रुप, रेखा में ऐक्य होने के कारण वह बाहर प्रकट होता है और समस्त विश्व के सूर के साथ फूल का मेल होता है। उसी प्रकार अर्थकामी व्यक्ति का अर्थ कमाने में ऐक्य मिलना खंडित प्रक्रिया होती है।

किन्तु रससाहित्य में वह विश्व के साथ ऐक्य बनाए रखता है। साहित्य में लोकसाहित्य वैसे तो बहुत कम लिखा गया है। लोकसाहित्य यह जीवन का साहित्य होता है। इस साहित्य में जीवन और अधिक सहज प्रस्फुटित होता है। जिस कृति में जनजीवन स्पष्ट होता है उसे लोकसाहित्य कहाँ जाता है। आँचलिक उपन्यास भी लोकसाहित्य के निकटस्थ होते है। वेशभूषा, भाषा, संस्कृति, परिवेश, वातावरण इनका सधा-मँझा वर्णन जहाँ होता है वह आँचलिक साहित्य कहाँ गया है। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी कहते है– "अपरिचित भूमियों और अज्ञात जातियों के जीवन का वैविध्यपूर्ण चित्रण जिन कथा-कृतियों में हो उन्हें आँचलिक कहा जाना चाहिए।"[2] इसमें राजेन्द्र अवस्थी का भी विचार महत्त्वपूर्ण लगता है– "अंचल एक देहात भी हो सकता है और बड़ा शहर भी। शहर का एक मुहल्ला भी हो सकता है या इन सबसे दूर वन की उपतिकायें भी। आंचलिकता का आग्रह तो सजीव परिवेश का चित्रण। वह गाँव और शहर का भेद नहीं करता।"[3] वैसे हिंदी में प्रेमचंद के उपन्यासों में गाँव और शहर दोनों का विशुद्ध सजीव वर्णन है लेकिन प्रेमचंद के उपन्यास नहीं कहे जा सकते है। इससे हजारीप्रसाद द्विवेदी का बाणभट्ट की आत्मकथा आँचलिक उपन्यास नहीं जा सकते किन्तु फणीश्वरनाथ रेणु का 1954 में आया 'मैला आँचल' यह विशुद्ध आँचलिक उपन्यास माना गया है। डेकॉर्टे और लॉक इन दार्शनिकों ने 'द राइज ऑफ वोवल' पुस्तक में इस प्रकार से कहाँ है कि सच्चे उपन्यासकार का प्रमुख कर्तव्य है कि अपनी जीवन साधना से उपलब्ध व्यक्तिगत अनुभवों को सच्चा और ईमानदारीपूर्ण प्रभावोत्पादक विवरण देना है। इसके लिए उपन्यासकार जितना सशक्त बिम्बविधान देगा उतना वह अच्छा है।[4] उपन्यास में चरित्र-चित्रण तथा

Scanned with CamScanner

वातावरण निर्माण रूप में होते है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार चरित्र चित्रण को सूक्ष्मता से उजागर करता है और आँचलिक उपन्यासकार वातावरण को सूक्ष्मता से उजागर करता है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक जे. डी. बरनोल के अनुसार उपन्यासों में यथार्थवाद में मार्क्सवाद का ही चित्रण है। पाश्चात्य उपन्यासों में इसका भव्य रूप मिलता है किन्तु भारतीय आँचलिक उपन्यासों में मार्क्सवाद के अत्यन्त विकृत अंगों को बताया है।

आँचलिक उपन्यास में प्रकृतिचित्रण का भी बहुत वर्णन देखने को मिलता है। "गाँव के पूरब एक धारा है जिसे कमला नदी कहते है। बरसात में कमला भर जाती है, बाकी मौसम में बड़े-बड़े गढ्ढों में पानी जमा रहता है। मछलियों और कमल के फूलों से भरे हुए गढ़े।"[5] साथ में आगे उपन्यास में यह भी वर्णन ष्गाँव के लोक बड़े सीधे दिखते है, सीधे का अर्थ यदि अनपढ़, अज्ञानी और अंधविश्वासी हो तो वास्तव में सीधे है वे। जहाँ तक सांसारिक वृद्धी का सवाल है वे हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पाँच बार ठग लेंगे और तारीफ यह है कि तुम ठगे जाकर भी उनकी सरलता पर मुग्ध होने के लिए मजबूर हो जाओगे।"[6]

आँचलिक उपन्यास में देहात की सांस्कृतिक धरोहर का भी उल्लेख होना अपेक्षित होता है। सांस्कृतिक समारोह, नृत्य, गीत आदि का भी समावेश होता है।

"नहीं तोरा आहे प्यारो तेग तरबरिया से
नहीं तोरा पास में तोरा जी।"[7]
"धगिड़ागि धागिड़ागि, धागिडाग्गि!
चटाक चडधा चटधा!
उठा पटक दे उठा पटक दे
गिड़ गिड धा गिड़ गिड़ धा
वह वा, वह वा, वाह बहादुर!"[8]

गाँव भर के लोग तहसीलदार साहब के आते ही ईकठ्ठा हो गए। शामियाना बाँधा गया था तब वहाँ पर–

"तिरविट घन्ना तिरटिधिन्ना
धिन तक धिन्ना धिक तक धिन्ना

Scanned with CamScanner

धिनक धिनक धा
धिक धिक तिन्ना"[9]

अपने पति से रूठकर जट्टिन नैहर चली गयी जाट उसे ढूँढने जा रहा है। जट्टिन बडी सुंदर है उसकी सुंदरता की बहुत चर्चा है।

"सुनरी हमार जटनियां हो बाबूजी
पातारे बास के छौकनिया हो बाबूजी
मोरी हमराज टिनिया हो बाबूजी
चाननी रात के इँजोरिया हो बाबूजी
नान्हीं नान्हीं दँतवा पातर ठोरवा
छटके जैसन बिजलिया।"[10]

आँचलिक उपन्यास में राजनितिक हलचल भी दिखाई देती है मैला आँचल में वह हलचल दिखाई देती है। उस अंचल में समाजवादी पार्टी और काँग्रेस की हलचल दिखाई देती है। कम्युनिस्ट और राष्ट्रीय स्वयंसंघ भी छुटपूट मात्रा में राजनीति में दिखाई देते है।

बालदेव को कपड़ा बाँटने का काम मिला है वे किस प्रकार कपडे की पर्ची अपने लोगों में बाँटते है- "बालदेव जी को क्या मालुम कि दुलारी का गौना पाँच साल पहले हो गया है। बालदेवजी का राह चलना मुश्किल हो गया है। कपडा की मेम्बरी मिली है कि बलाय है! दिसा मैदान जाते समय भी लोग पिछा नहीं छोड़ते है।"[11] कालीचरण और वासुदेव के बारे में कहां जाता है- "कामरेड कालीचरण और कामरेड वासुदेव! सुशलिंग पार्टी!... रास्ते में कालीचरण वासुदेव को समझाता है। यही पार्टी असल पार्टी है। किरान्तीदल का भी नाम सुना था। बम फोड दिया फरक से मस्ताना भगतसिंह यह गाना नहीं सुने हो? वही पार्टी है।"[12] किसान आंदोलन को लेकर काँग्रेस और सोशलिस्ट पार्टी में भी नोंक झोंक है– "हमारे काँग्रेस के मेम्बरों को भी सोशलिस्ट पार्टी का मेम्बर बना दिया है। इसलिए सिवनाथबाबू को बुला रहे है। चरखा सेंटर खुलेगा एक पुराना कार्यकर्ता बावनदास भी आ रहा है।"[13]

मैला आँचल में 1942 की क्रांति का भी उल्लेख हुआ है– "अगस्त 1942 कचहरी पर चढाई। धाँय-धाँय पुलिस हवाई फायर करती है। लोग भाग रहे

Scanned with CamScanner

है। बावनदास ललकारता है, जनता उलटकर देखती है। देढ़ हाथ का इन्सान सीना ताने खड़ा है... बम्बई से आयी आवाज।...जनता लौटती है...। बावनदास पुलिसवालों के पाँवों के बीच से घेरे के उस पार चला जाता है और विजयी तिरंगा शान से लहरा उठता है... महात्मा गांधी की जय।"[14] फणीश्वरनाथ रेणु जी के मैला आँचल की आँचलिकता पर यह भी दोषारोपन किया गया है। इस उपन्यास में आँचलिकता का रंग इतना गहरा हो गया है कि वह वैचित्र्य की उत्पत्ति हो गई है। अति यथार्थ बहुत नग्न रूप में आया है। कुत्सित परम्पराओं में और सेक्स में ही यहाँ के लोग अधिक रमते है। हालाँकि भाषा की दृष्टि से उपन्यासकार ने सबल प्रयास किया है कि लोकगीतों, गालियों, सहज बोली द्वारा उसका आँचलिकत्व बना रहे। किन्तु जीवन की गति की दृष्टि से मैला आँचल सही है इसमें आँचलिक जीवन उजागर होता है।

संदर्भ

1. साहित्य सहचर - हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 06
2. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, राकेश, पृ. 70
3. राजेन्द्र अवस्थी - सारिका - 1971
4. विमल शंकर नागर - हिंदी के आँचलिक उपन्यासः सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भ, पृ. 56
5. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, पृ. 09
6. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, पृ. 13
7. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, पृ. 26
8. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, पृ. 49
9. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, पृ. 56
10. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, पृ. 29
11. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, पृ. 71
12. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, पृ. 82
13. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, पृ. 77
14. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, पृ. 23